Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : तरंग हिन्दी पाठमाला-3

पाठ- 5 श्रम का महत्त्व

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा तीसरी की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक मे दिए पाठ -5 'श्रम का महत्त्व' को पढ़ेंगे तथा इसे समझेंगे।

बच्चो! राजपुर गाँव में अमीरचन्द नाम का एक धनी किसान रहता था। उसके पास बहुत सी ज़मीन थी। बहुत-से आदमी उसके खेतों में काम करते थे। धनी किसान के राजू और सूरज नाम के दो लड़के थे। राजू बड़ा था और सूरज छोटा।

दोनों बेटों के बड़े होने पर किसान ने उन्हें अपनी आधी-आधी ज़मीन बाँट दी और काम करने वाले आदमी भी बराबर बाँट दिए। किसान का बड़ा लड़का राजू सुस्त और आलसी होने के कारण खेतों में न जाकर अपने आदमियों को ही खेतों में जाकर काम करने के लिए कह देता था परन्तु वे आदमी काम कम करते थे और बातें अधिक करते थे। समय पर काम न होने के कारण धीरे-धीरे उपज कम होने लगी। इस कारण राजू गरीब हो गया।

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

दूसरी ओर छोटा लड़का सूरज बहुत परिश्रमी था। वह सुबह होते ही कंधे पर हल रखकर अपने आदमियों को पुकारता आओ, खेतों पर चलकर काम करें। वह खेतों में डटकर काम करता। उसे देख उसके आदमी भी परिश्रम करते। समय पर काम होने के कारण उसकी उपज दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। वह अधिक काम करके दिखाने वाले आदमियों को पुरस्कार भी देता था। कुछ ही वर्षों में वह धनी हो गया।

एक दिन चतुर पिता ने अपने दोनो बेटों को बुलाकर हालचाल पूछा। सबसे पहले बड़े लड़के राजू ने बताया कि वह तो गरीब हो गया है और अपने भाग्य को कोसने लगा। छोटे लड़के सूरज ने खुश होकर बताया कि वह आपकी कृपा से बहुत तरक्की कर रहा है और उसे इस कार्य में आनंद आ रहा है।

बूढ़े किसान ने उन्हें कहा कि मैंने तुम दोनों को बराबर का भाग दिया था अंतर केवल जाओ और आओ में है जब दोनों बेटे पिता की इस बात को नहीं समझ पाए तो उन्होंने बताया कि राजू तुम सदा अपने आदमियों से कहते थे जाओ, काम करो और तुम्हारा भाई आओ, काम करें कहता था और स्वयं परिश्रम करता था। उसे परिश्रम करते देख सूरज के आदमी भी खूब काम करते थे।

यह बात सुनते ही बड़े लड़के राजू की आँखें

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

खुल गई। वह यह जान गया कि मेहनत से ही तरक्की हो सकती है। अब वह ठीक ढंग से काम करने लगा जिससे उपज बढ़ने लगी। अतः कहा जा सकता है कि जीवन में परिश्रम के बिना सफलता नहीं पाई जा सकती।

गृहकार्य

सभी छात्र इस पाठ को दो-तीन बार ऊँचे —— में पढ़ेंगे तथा निम्नलिखित कार्य को अपनी-अपनी साहित्य की कॉपी में लिखेंगे।

→कठिन शब्द

1. संख्या 2. दिनोंदिन 3. परिश्रम 4. सिंचाई 5. उपज 6 उन्नति 7. भाग्य 8 पुरस्कार 9. मुस्कश 10. आनंद।

→सुलेख

सभी छात्र इस पाठ को अपनी कॉपी का एक पृष्ठ सुलेख के रूप में लिखेंगे।

→शब्द अर्थ

1. परिश्रम - मेहनत 2. फ़र्क - अंतर 3. उन्नति - तरक्की
4. भाग्य - किस्मत 5 धनी - अमीर 6 उपज - पैदावार

→वाक्य बनाओ

1. परिश्रम - परिश्रम करने से ही सफलता मिलती है।
2. भाग्य - हमें भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए।
3. ज़मीन - यह ज़मीन उपजाऊ है।
4. खेत - किसान के खेत लहलहा उठे।
5. आलसी - हमें आलसी नहीं बनना चाहिए।

धन्यवाद।

[Last Page]